अध्याय–11

वन अनुसंधान केन्द्र हैदराबाद

वन अनुसंधान केन्द्र, हैदराबाद ने काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर के प्रशासनिक नियंत्रण में जुलाई, 1997 से कार्य करना शुरू किया। इस केन्द्र को वानिकी अनुसंधान के सभी क्षेत्र में आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक और गोवा राज्यों के दक्षिणी शुष्क पर्णपाती पारितंत्र की अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थापित किया गया।

वर्ष 2004–2005 के दौरान पूरी की कई परियोजनाएं

कोई नहीं

वर्ष 2004–2005 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1 : आन्ध्र प्रदेश के अर्ध–शुष्क उष्णकटिबंधी में विभिन्न कृषि वानिकी प्रणालियों का प्रदर्शन [एफ.आर.सी.–01/ए.एफ.–01/2001–2006]

स्थिति : सागौन + चन्दन, रोजवुड + चन्दन, यूकेलिप्टस + चन्दन और सागौन + चन्दन + रोजवुड के स्टेशन पर परीक्षण स्थापित किए गए और वर्षा पर आधारित फसल के रूप में एरण्ड लगाई गई। विभिन्न वृक्ष संयोजनों के सम्पर्क में एरण्ड वृद्धि और प्रदर्शन का मानीटरन किया गया।

परियोजना 2 : पालतू बनाने के लिए लेगरस्ट्रोमिया प्रजातियों की प्राकृतिक आबादियों की जाँच [एफ. आर.सी.–05/टी.आई.–02/2003–2006]

स्थिति : आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक में प्रचलित लेगरस्ट्रोमिया की दो प्रजातियों का सर्वेक्षण किया और अनेको आबादियों की पहचान की गई। जननद्रव्य की प्रक्रिया शुरू की गई।

परियोजना 3 : रोजवुड (डैल्बर्जिया सिस्सू रॉक्सब) में प्राकृतिक विभिन्नता अध्ययन [एफ.आर. सी.–04/टी.आई.–02/2003–2006]

स्थिति : आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक के विभिन्न भागों में धन वृक्षों को चिह्नित किया गया। जननदृव्य संग्रहण की प्रक्रिया शुरू की गई।

परियोजना 4 : टेरोकार्पस मार्शुपियम में परितर्वतनशीलता का आंकलन और जननद्रव्य संग्रहण [एफ. आर.सी.–07/टी.आई.–04/2003–2005]

स्थिति : आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक के विभिन्न भागों में धन वृक्षों को चिह्नित किया गया। जननदृव्य संग्रहण की प्रक्रिया शुरू की गई।

परियोजना 5 : टेरोकार्पस सेन्टेलिनस में समरूपी विभिन्नता पर अध्ययन और जननद्रव्य संग्रहण [एफ.आर.सी.–04/टी.आई.–01/2003–2006]

स्थिति : आन्ध्र प्रदेश के कूरनूल, कुडप्पा और चित्तूर जिलो का सर्वेक्षण किया और जननद्रव्य संग्रहण के लिए वृक्ष प्रजातियों की पहचान की गई।

परियोजना 6 : आन्ध्र प्रदेश को कपास आधारित कृषि वानिकी प्रणालियों में कीट आबादियों की गतिकी [एफ.आर.सी.–08/ई.बी.04/2002–2005]

स्थिति : जांच के तहत विभिन्न प्रणालियों के छत्र में प्राकृतिक शत्रुओं के स्पेक्ट्रम के साथ वृक्ष और कपास फसल पर नाशिकीट के प्रभाव पर समय–समय पर आंकड़े एकत्र किए जा रहे हैं।

परियोजना 7 : आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक में लौह अयस्य, चूना पत्थर खान ढेरों का सुधार [एफ.आर. सी.–03/ई.बी.02/2002–2005]

स्थिति : कार्य प्रगति पर है।

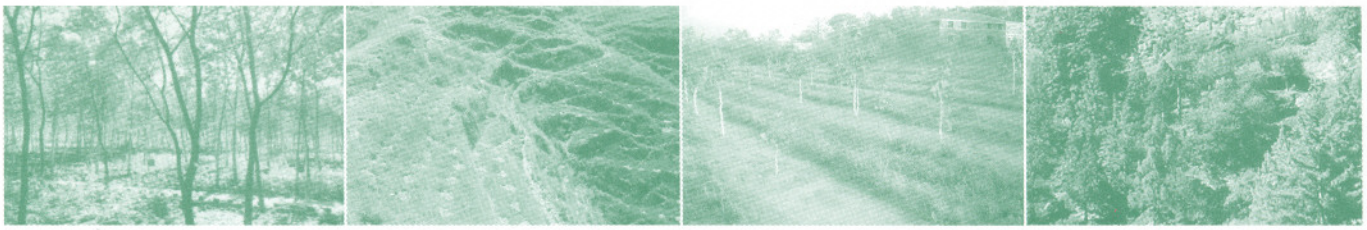

परियोजना 8 : आन्ध्र प्रदेश में वनों के पुनर्जनन पर वनाग्नि के प्रभाव का मूल्यांकन [एफ.आर.सी.–01/ई.बी.01/2002–2005]

स्थिति : पादप सामाजिक अध्ययन किए गए। मृदा नमूने एकत्र किए गए और प्रगति में है।

वर्ष 2004–2005 के दौरान शुरू की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : पश्चिमी घाट, कर्नाटक में वन कार्बन पूल का आंकलन–प्रमुख वन किस्मों के लिए जैवमात्रा विस्तार कारकों का विकास [एफ.आर.सी.–10/सी.सी.–01/2004–2006]

स्थिति : उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनों के संबंध में जड़ जैवमात्रा का आंकलन किया जा रहा है और विभिन्न पहलुओं पर आंकड़े एकत्र किए जा रहे हैं।

परियोजना 2 : आन्ध्र प्रदेश में मृदा पर क्लोनीय यूकेलिप्टस रोपणों के प्रभाव, किसानों की भूमि में भौतिक और रासायनिक गुण [एफ.आर.सी.–10/एस.एस.–01/2004–2006]

स्थिति : विभिन्न आयु के यूकेलिप्टस क्लोनीय रोपण से मृदा नमूनो एकत्र किए गए और विश्लेषण किया जा रहा है।

वर्ष 2004–2005 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

(बाहर से सहायता प्राप्त)

कोई नहीं

वर्ष 2004–2005 के दौरान जारी परियोजनाएं

(बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1: पश्चिमी घाटों, कर्नाटक में वन कार्बन पूल का आंकलन – प्रमुख वन किस्मों के लिए जैवमात्रा विस्तार कारकों का विकास [2004–2007]

स्थिति : उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनों के संबंध में जड़ जैवमात्रा आंकलन किया जा रहा है और विभिन्न पहलुओं पर आंकड़े एकत्र किए जा रहे हैं।

अनुसंधान उपलब्धियां

राज्य का नाम	2004–2005 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2004–2005 में जारी परियोजनाओं की संख्या	2004–2005 में शुरू की गई परियोजनाओं की संख्या
आन्ध्र प्रदेश	कोई नहीं	2	6
कर्नाटक	कोई नहीं	1	1
गोवा	कोई नहीं	कोई नहीं	कोई नहीं

प्रौद्योगिकी मूल्यांकित और हस्तान्तरित

प्रौद्योगिकी के हस्तान्तरण कार्यक्रम के एक भाग के रूप में कृषि वानिकी प्रणालियों के क्षेत्र में वन अनुसंधान केन्द्र, हैदराबाद परिसर में प्रदर्शन रोपण स्थापित किए गए।

शिक्षा और प्रशिक्षण

एक गैर सरकारी संगठन, गांव पुनर्निर्माण संगठन (भारत) के तहत पच्चीस शिक्षित युवकों के एक समूह ने केन्द्र का भ्रमण किया। ग्रामीण युवकों के लिए रोजगार के अवसर के सबंध में

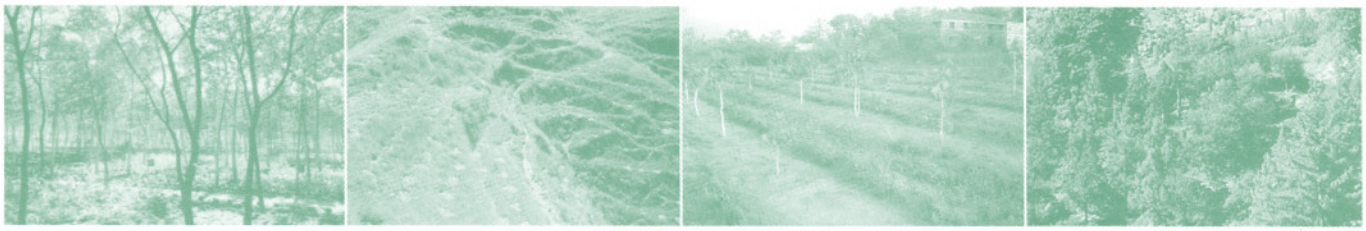

वानिकी क्षेत्र में जारी अनुसंधान तथा अन्य विकासात्मक कार्यकलापों पर विचार–विमर्श किया गया।

सहानुबंध और सहयोग

राष्ट्रीय

वन अनुसंधान केन्द्र, हैदराबाद के पास वर्तमान में एन आर एस ए, हैदराबाद, आई.टी.सी.– पी.एस. पी. डी, भद्राचलम, आन्ध्र प्रदेश वन विभाग और ए पी एफ डी सी के साथ सहयोग से दो जारी परियोजनाएं हैं।

परामर्श

1. कुन्द्रमुख लौह अयस्क क0 लि0 को अन्तिम रूप से खान को बन्द करने की योजना को तैयार करने में सहयोग दिया।
2. टीला वेगू नदी सिंगेरीनी कॉलीरिज को मोड़ने के कारण वनस्पति एवं प्राणिजात में परिवर्तनों के अध्ययन में सहयोग दिया।
3. सिंगेरीनी कोयला खानों में फोरलिमिट परियोजना में वनस्पति के अध्ययन में सहयोग दिया।

सम्मेलन / बैठकें / कार्यशालाएं / सेमिनार / संगोष्ठी / प्रदर्शनियां

1. डा. जी.आर. एस रेड्डी, वैज्ञानिक–ई ने इन्फो कन्सैप्ट इंडिया इंक द्वारा 15 और 16 अक्टूबर, 2004 को आयोजित ''जट्रोफा करकस और एलोय पर राष्ट्रीय सेमिनार में हैदराबाद में कार्यशला में भाग लिया।
2. श्री एम. लोकेश्वरा राव, वन संरक्षक ने एन आई आर डी, हैदराबाद में 24 से 29 जनवरी, 2005 तक ''संयुक्त वन प्रबंध : उपाय और तकनीक'' पर प्रशिक्षण में भाग लिया।
3. श्री एम. लोकेश्वरा राव, वन संरक्षक, डा0 जी. आर. एस. रेड्डी, वैज्ञानिक–ई और डा0 व्हाई. श्रीधर, वैज्ञानिक–बी ने आन्ध्र प्रदेश वन विभाग द्वारा 19 और 20 फरवरी, 2005 तक आयोजित ''आजीविका के लिए बांस'' पर कार्यशाला में भाग लिया।
4. डा. व्हाई, श्रीधर, वैज्ञानिक–बी ने 15 और 16 जुलाई, 2004 को हैदराबाद में सम्पन्न ''स्थायी जैव प्रदूषकों'' पर कार्यशाला में भाग लिया।
5. श्री टी.एस. डांगे, उप वन संरक्षक ने फरवरी, 2005 में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून में "उन्नत वन प्रबन्ध" पर भावसे अधिकारियों के लिए सेवाकाल प्रशिक्षण में भाग लिया।
6. डा. जी.आर.एस. रेड्डी, वैज्ञानिक–ई ने टी.आई.एफ.ए.सी. और सी.आई.आई द्वारा प्रायोजित "बौद्धिकर सम्पत्ति प्रबन्धन : उद्योग और संस्थान में बौद्धिकर सम्पदा संस्कृति को प्रोत्साहित करना" पर 15 और 16 जुलाई, 2004 तक हैदराबाद में कार्यशाला में भाग लिया।
7. श्री टी.एस. डांगे, उप वन संरक्षक ने सी.सी.एम.बी., हैदराबाद में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय डी.एस.आई.आर. द्वारा आयोजित "डी.एस.आई.आर. के प्रौद्योगिकी सूचना सरलीकरण कार्यक्रम के तहत विशेषज्ञ बैठक" में भाग लिया।